



THE STUDY

DAILY ARTICLE

An Institute for IAS

HISTORY

BY

MANIKANT SINGH

दक्षिण एशिया का जलवायु परिवर्तन एक टिक-टिक करने वाला बम है

स्रोत – द हिन्दू

चर्चा में क्यों?

- ◆ 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस की 50वीं वर्षगांठ मनाई गई। जलवायु क्षेत्र में जलवायु विस्थापन की भयावहता के बावजूद, सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की प्रतिक्रिया अपर्याप्त रही है।

विश्व पर्यावरण दिवस

- ◆ विश्व पर्यावरण दिवस की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र ने 1972 में मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम सम्मेलन में की थी।
- ◆ विश्व पर्यावरण दिवस- 2023 की थीम “Solutions to Plastic Pollution” है। यह थीम प्लास्टिक प्रदूषण के समाधान पर आधारित है।
- ◆ 50 वर्षों के बाद भी दुनिया की आबादी के 40% लोग उन क्षेत्रों में रहते हैं जो विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं, जिनमें पानी की कमी, सूखा, गर्मी का तनाव, समुद्र के स्तर में वृद्धि, उष्णकटिबंधीय चक्रवात और बाढ़ जैसी चरम घटनाएं शामिल हैं।
- ◆ प्रवासियों, शरणार्थियों और समाजों पर विश्व विकास रिपोर्ट के अनुसार दुनिया वैश्विक आर्थिक असंतुलन, जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों एवं जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए संघर्ष कर रही है, आय के सभी स्तरों पर देशों के लिए आने वाले दशकों में प्रवास एक आवश्यकता बन जाएगा।

हॉटस्पॉट क्षेत्र में जलवायु विस्थापन

- ◆ दक्षिण एशिया में दुनिया के सबसे अधिक प्रभावित जलवायु विस्थापन हॉटस्पॉट हैं, जिनमें हिंदुकुश-हिमालय क्षेत्र, तटीय क्षेत्र, द्वीप राष्ट्र तथा डेल्टा और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र शामिल हैं।
- ◆ भूमि क्षेत्र, जो उच्च पर्यावरणीय भेद्यता से ग्रस्त हैं, उनमें बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं, ये समुद्र के स्तर में वृद्धि और तटीय बाढ़ से प्रभावित हैं।
- ◆ जबकि भूटान, अफगानिस्तान और नेपाल हिमनदों के पिघलने और तापमान में वृद्धि से प्रभावित हैं, मालदीव जैसे छोटे द्वीप राष्ट्रों को जलमग्न होने का खतरा है।

THE STUDY
BY MANIKANT SINGH

thestudyias@gmail.com
MOB: 9999516388

- ◆ उच्च जनसंख्या घनत्व, गरीबी और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के कारण स्थिति और खराब हो गई है। 2050 तक, लगभग 216 मिलियन दक्षिण एशियाई लोग जलवायु संबंधी कारणों से विस्थापित हो सकते हैं।
- ◆ 2020 में, अकेले चक्रवात अम्फान ने पूरे दक्षिण एशिया में 50 लाख लोगों को विस्थापित किया। 2015 में, नेपाल के गोरखा भूकंप ने 2.6 मिलियन लोगों को विस्थापित किया और 6,00,000 से अधिक बेघर हो गए। 2022 में पाकिस्तान में बाढ़ से 7.9 मिलियन से अधिक लोग विस्थापित हुए थे।

विस्थापन की लागत

- ◆ 2050 तक, विश्व स्तर पर 1.2 बिलियन जलवायु शरणार्थी हो सकते हैं।
- ◆ दक्षिण एशिया में, 2020 में 9 मिलियन से अधिक आंतरिक विस्थापन हुए हैं, जिससे यह जलवायु परिवर्तन के कारण सबसे अधिक नए विस्थापन वाला क्षेत्र बन गया है।
- ◆ जलवायु विस्थापन का परिणाम नौकरी के नुकसान, खाद्य असुरक्षा और संसाधनों की एक समग्र भीड़भाड़ के रूप में होता है, जिससे आगे पलायन होता है तथा अन्य सामाजिक और आर्थिक लागतें आती हैं।
- ◆ '2030 तक भारत को जलवायु परिवर्तन को अपनाने में 85.6 लाख करोड़ रू. खर्च करने होंगे'। खराब आर्थिक क्षमताएं जलवायु परिवर्तन की घटनाओं के लिए समुदायों की अनुकूली क्षमता को कम करती हैं और प्रवासन को बढ़ावा देती हैं।
- ◆ आंतरिक रूप से विस्थापित लोग बेहतर आजीविका के अवसरों और सुरक्षा के लिए पलायन करते हैं। दक्षिण एशिया में जलवायु प्रवासन से जुड़ी आर्थिक लागतों में कुशल श्रम की हानि और कृषि, मत्स्य पालन तथा वानिकी में कम उत्पादकता शामिल है।
- ◆ विस्थापन सामाजिक नेटवर्क और समुदायों के टूटने, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों, सामाजिक अशांति और संघर्ष जैसी सामाजिक लागतों को भी जन्म दे सकता है।
- ◆ कृषि पैटर्न और पानी की उपलब्धता में परिवर्तन लोगों को शहरी क्षेत्रों में पलायन करने के लिए मजबूर करता है। इस तरह के ग्रामीण-शहरी प्रवास उन शहरों पर भारी पड़ते हैं जो पूर्ववत क्षमता पर काम कर रहे हैं।
- ◆ जलवायु प्रवासन पहले से मौजूद खतरों जैसे भीड़भाड़ और संसाधनों के बंटवारे पर संघर्ष पर गुणक प्रभाव पैदा करता है। जलवायु भेद्यता और हिंसा के बीच संबंध उल्लेखनीय है। 2020 में, 95% संघर्ष-संबंधी विस्थापन जलवायु संवेदनशील देशों में रिपोर्ट किए गए।

जलवायु शरणार्थियों का समर्थन करना

- ◆ बाढ़ से लेकर मरुस्थलीकरण तक की आपदाओं के कारण, दक्षिण एशिया में 2050 तक अनुमानित 50 मिलियन जलवायु शरणार्थी होंगे।
- ◆ लवणता प्रतिरोधी फसलों को अपनाने, तटीय क्षेत्रों को प्रतिरोधी बनाने और बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने जैसे स्थायी समाधानों को पेश करके प्रतिरोध और लचीलेपन में सुधार का महत्व होगा।

- ◆ इस तरह के ढांचे के अंतराल को ठीक करने की जरूरत है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि समुदायों को पलायन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाए।
- ◆ गरीबी और खराब बुनियादी ढांचे के अंतर्निहित आर्थिक कारण जलवायु अनुकूलन पद्धति की प्रभावकारिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कमजोर नीति प्रतिक्रियाएं

- ◆ इस क्षेत्र में जलवायु विस्थापन की भयावहता के बावजूद, सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की प्रतिक्रिया अपर्याप्त रही है।
- ◆ दक्षिण एशिया के अधिकांश देशों में जलवायु विस्थापन को संबोधित करने के लिए व्यापक नीतियों का अभाव है और प्रभावित समुदायों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता अपर्याप्त रही है।
- ◆ जलवायु वित्त पोषण के अधूरे लक्ष्य भी विकासशील देशों को अपने जलवायु लक्ष्यों को वित्तपोषित करने और लचीला बनाने से रोकते हैं।
- ◆ अनुकूलन और शमन उपायों का समर्थन करने के लिए जलवायु-नम्य बुनियादी ढांचे का निर्माण और आपदा तैयारियों में सुधार आवश्यक है।
- ◆ सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों को दक्षिण एशिया में जलवायु विस्थापन की गंभीरता को पहचानना चाहिए और इसके प्रभावों को कम करना चाहिए।
- ◆ इसके अलावा, इस क्षेत्र की सरकारों को लक्षित नीतियां विकसित करनी चाहिए जो जलवायु-विस्थापित समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करती हों।
- ◆ लचीलापन विकसित करने के अलावा, नीतियों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने में प्रभावित समुदायों की मदद करने के लिए वैकल्पिक आजीविका के अवसर और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम प्रदान करने पर ध्यान देना चाहिए।

स्टॉकहोम सम्मेलन (1972)

- ◆ अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण चेतना एवं पर्यावरण आंदोलन के प्रारंभिक सम्मेलन के रूप में 1972 में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने स्टॉकहोम (स्वीडन) में दुनिया के सभी देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया था। इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 119 देशों ने भाग लिया और 'एक पृथ्वी' के सिद्धांत को सर्वमान्य तरीके से मान्यता प्रदान की गई।
- ◆ हालांकि, COP-27 में विकसित "हानि और क्षति" ढांचे का उद्देश्य सबसे अधिक प्रभावित देशों का समर्थन करना है, जिसे जलवायु न्याय के एक अभिन्न अंग के रूप में देखा जाता है।

कमियां

- ◆ आवश्यक धन की राशि और अनुदान देने वालों के पदनाम अभी भी अनुत्तरित प्रश्न बने हुए हैं। यूरोपीय देशों को चिंता है कि सऊदी अरब जैसे तेल और गैस आपूर्तिकर्ताओं के रूप में उन्हें एक बड़ी ज़िम्मेदारी उठानी पड़ सकती है।

- ◆ जबकि मानव गतिशीलता CoP एजेंडे पर अपनी जगह नहीं पा सकी, अंतिम CoP- 27 पाठ ने "विस्थापन", "पुनर्वास" और "माइग्रेशन" की पहचान कुछ ऐसे चिंता वाले क्षेत्रों के रूप में की जिन्हें 'हानि और क्षति' वित्तपोषण द्वारा संबोधित किया जाएगा।
- ◆ UNHCR ने COP-27 में शरणार्थियों और विस्थापित लोगों का सवाल उठाया; विश्व पर्यावरण दिवस के पांच दशकों के बाद भी, जलवायु प्रवासियों को अभी तक वैश्विक मंच पर अपनी आवाज नहीं मिल पायी है।

